राजपूत चित्रकला और मध्यकालीन श्रीकृष्ण काव्य-धारा के संबंधों का विवेचनात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

॥

शोध-प्रारूप

संकाय-मानविकी

विषय-हिन्दी

शोध-निर्देशक

प्रो० (डॉ०) उमेश कुमार
विभागाध्यक्ष
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधार्थी

ज्योति सिन्हा
पैट क्रमांक– E2209063
पुत्री– श्री वीरेन्द्र कुमार लाल
ग्राम+पो०– चंगेल, थाना- कटरा
जिला- मुजफ्फरपुर, बिहार

प्रस्तावित विषय–

राजपूत चित्रकला और मध्यकालीन श्रीकृष्ण काव्य-धारा के संबंधों का विवेचनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना–

हिन्दी साहित्य में कृष्णकाव्य-धारा अपनी कई विशिष्टताओं के साथ उपस्थित होती है। इस काव्य-धारा में भक्ति, श्रृंगार एवं कला की त्रिवेणी प्रवाहित होती है। खास तौर से मध्यकाल में कृष्णकाव्य-धारा का विशेष महत्व रहा है। वैसे तो धर्म और संस्कृति के इतिहास में प्राचीन काल से ही कृष्ण की महत्ता स्वीकारी जाती रही है। यही कारण है कि कृष्ण-कथा मौखिक रूप से लोक में भी प्रचलित रही है।

12 वीं शताब्दी में जयदेव ने ‘गीत गोविन्द’ की रचना कर संस्कृत भाषा को सरल रूप प्रदान किया था। साथ ही राधा-कृष्ण की प्रेम-भावना को दर्शानेवाले मध्यकालीन कवियों ने जयदेव कृत ‘गीतगोविन्द’ को एक प्रेरक ग्रन्थ माना है।

“अनुमान है कि कवि को उसकी रचना की प्रेरणा राधा-कृष्ण सम्बंधी लोकगीतों तथा लोक प्रचलित आख्यानों से ही मिली होगी। इसी लोक-परम्परा की देश भाषा में सबसे पहली साहित्यिक अभिव्यक्ति चौदहवीं-पन्द्रहवीं शती में विद्यापति के मैथिल-पदों में हुई। इसे हिन्दी कृष्णकाव्य की पहली रचना कही जा सकती है।” **(हिन्दी साहित्य कोश, भाग- 1, ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी, संस्करण- 2007, पृ.सं.-206)**

इससे पूर्व पद्मपुराण और सबसे अधिक ब्रह्मवैवर्त्त पुराण में राधा-कृष्ण की कथा विस्तार से वर्णित है। इसके साथ ही लोक-साहित्य और लोक-गीत में कृष्ण चारित की कथाएँ प्रचलित रही है। इसका प्रभाव आने वाले साहित्य पर विशेष रूप से पड़ा है।

विद्यापति के उपरांत भक्तिकाल के सूरदास ने श्रीकृष्ण के विविध रूपों का वर्णन किया है। श्री कृष्ण के सम्पूर्ण आख्यान को सूर ने 'सूरसागर' में संग्रहित किया है। हलाँकि भागवत कथा के आधार पर ही उन्होंने कृष्ण चरित को दर्शाया है परन्तु उन प्रसंगों को विस्तार रूप प्रदान किया है।

लीला पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण के जीवन-चरित को भक्तिकाल और रीतिकाल के अन्दर देखा जा सकता है। इसके अलावे श्रीकृष्ण से सम्बंधित अनेक घटनाएँ एवं उपकथाएँ अनेक ग्रंथों में वर्णित है। "कृष्णकाव्य की एक सामान्य प्रकृति यह भी है कि वह अधिकतर मुक्तक रूप में रची गयी है, क्योंकि कृष्णकाव्य में वर्णित कृष्ण की कथा अत्यंत सीमित है। सूरदास ने ही उसके सभी घटना विवरण दे दिये हैं। कृष्ण के जन्म, शैशव, गोपों के साथ क्रीड़ा गोचारण, राधा तथा गोपियों के साथ रस-केलि, छद्मवेशधारी असुरों का वध, गोवर्धनधारण और इन्द्रदमन, मथुरा-प्रवास, कंशवध, उद्धव-सन्देश, द्वारिका-गमन तथा प्रवासक्षेत्र में गोप-गोपियों और राधा के साथ पुनर्मिलन।" **(हिन्दी साहित्य कोश, भाग- 1, पृ.सं.- 206, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी-1)**

सूरदास के अलावा अष्टछाप के कवियों ने भी श्री कृष्ण चरित्र को दर्शाया है। नंददास ने श्रीकृष्ण के चरित्र में अपने मौलिक विचारों को व्यक्त किया है। उन्होंने 'श्याम सगाई', 'भँवर गीत' और 'रास पंचाध्यायी' में कृष्ण के चरित को दर्शाया है।

रीतिकाल तक आते-आते कृष्ण चरित सम्बंधी काल को और भी अधिक बल मिला जहाँ भक्तिकाल में श्रीकृष्ण के चरित्र को भक्ति-भाव से जोड़ कर देखा गया है वहीं दूसरी ओर रीतिकाल में आते-आते श्रीकृष्ण का श्रृंगारिक रूप और अधिक उभर कर आया। अतः भक्ति और रीतिकाल में श्रृंगार और कलात्मक अवधारणाओं की बड़ी महिमा रही है। इन दोनों कालों को मध्यकाल के नाम से अभिहित किया गया है। कुल मिला कर देखा जाय तो मध्यकाल में भक्ति की लहर और धर्म के प्रभुत्व के साथ-साथ श्रृंगारिक भावना का प्रवाह देखा जा सकता है। तत्कालीक वातावरण में सौन्दर्य-

भावना और कला के प्रति लोगों में आकर्षण को देख कर यही कहा जा सकता है कि मध्ययुग भक्ति, श्रृंगार और कला का संगम स्थल रहा है। उदात्तीकरण की स्थितियाँ स्वीकारी जाए तो कविता और चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त भावनाओं से हिंदी साहित्य में एक नवीन प्रकरण की स्थापना हो जाती है। अर्थात कला को छोड़कर न कविता आगे बढ़ी और न ही कविता को छोड़कर कला। कवि की कल्पना में जो चित्र बनते रहे, समीक्षकों को उन स्थितियों में एक रूपता दर्शन होते हैं। सच पूछा जाए तो मध्ययुग में चित्रात्मक भावना ही कविता का मूल आधार रहा है। सम्पूर्ण चित्रकला के इतिहास में सबसे अधिक लघु-आलेखन (Miniature Paintings) की परम्परा का निर्वाह मध्यकालीन युग में ही हो पाया है।

वैसे तो साहित्य के साथ चित्रकला को जोड़कर चलने की एक वृहद परम्परा रही है। संस्कृत के काव्य-ग्रंथ इसके प्रमाण है।

प्राचीन भारतीय समाज में चित्रकला की विशेष महिमा रही है। हमारे प्राचीन सांस्कृतिक ग्रंथ– वेद, पुराण, नाट्य-साहित्य, रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों में चित्रकला का उल्लेख मिलता है। अर्थात वैदिक साहित्य से लेकर बौद्ध एवं जैन साहित्य तक चित्रकला के विविध-आयामों की जानकारी मिल सकती है। वात्स्यायन के 'कामसूत्र' (200-300 ई.) कें तीसरे अध्याय में 64 कलाओं का उल्लेख मिलता है। 11वीं–12वीं शती में कामसूत्र की रची टीका "जयमंगला" में पुरोहित यशोधा पंडित ने चित्रकला के छ: अंग बताए हैं-

"रूप भेदाः प्रमाणानि, भाव लावण्य, भोजनम्।

सादृश्यं वर्णिकाभंग इति चित्र षडगकम्॥"

इससे, तो यही स्पष्ट होता है कि जिस तरह काव्य के तत्वों की व्याख्या होती है उसी तरह चित्रों के तत्वों की व्याख्या होती रही है। विष्णु धर्मोत्तरपुराण के 'चित्रसूत्रम्' में चित्र संबंधी प्रकरण की व्याख्या की गई है।

कालिदास के मेघदूतम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोवर्शीयम, अभिज्ञानशाकुन्तलम् एवं रघुवंश में चित्र की चर्चा हुई। हरिवंशपुराण, विष्णु धर्मोत्तरपुराण, मत्स्यपुराण, पद्मपुराण, गरुरपुराण, अग्निपुराण, स्कन्दपुराण आदि में भी चित्रकला विषयक महत्वपूर्ण तत्वों का उल्लेख मिलता है।

प्रागैतिहासिक कालों में चित्र के विविध आयाम को भी देखा जा सकता है। अजंता, जोगीमारा, बाघ एवं सिंगिरिया की गुफाओं में भी चित्रों के दर्शन, चित्रकला की प्राचीनता प्रमाणित करते हैं। यही कारण है कि मध्यकाल के साहित्य पर चित्रों का प्रभाव पड़ा है।

इस प्रकार से देखा जाए तो मध्यकाल में श्रीकृष्ण काव्य-धारा और राजपूत चित्रकला का गहरा संबंध है। तत्कालीन समाज में साहित्यकारों, कलाकारों और चित्रकारों का राज दरबार में विशेष सम्मान था। राजपूत चित्रकला के सम्बंध में मैं एक बात स्पष्ट कर देना चाहती हूँ कि पहाड़ी चित्रकला और राजस्थानी चित्रकला, राजपूत चित्रकला के ही दो भाग हैं। 1912 ई. में कुमार स्वामी ने राजपूत चित्रकला को मुगल चित्रकला से अलग बताया था।

राजपूत चित्रकला के प्रचलन से पूर्व अपभ्रंश शैली वर्तमान थी जो ताड़पत्रीय चित्र कागज, काष्ठ और भित्ति पर उकेरे जाते थें। 11वीं से 15वीं शताब्दी के मध्य इन चित्रों को बनाया गया था जिसका आधार साहित्य ही रहा है। श्वेताम्बर जैनियों ने ताड़पत्र पर अधिक चित्रों का निर्माण किया। इसके अलावे वे सचित्र पोथी भी तैयार करवाते थे। लघु-आलेखन की परम्परा यहीं से प्रारंभ हो जाती है। इस बीच में मुगल शैली के अन्तर्गत पाटन शैली, दक्कन शैली और गुजरात शैली का काफी विकास हुआ।

राजपूत चित्रकला के अन्तर्गत राजस्थानी चित्रकला और पहाड़ी चित्रकला का विकास हुआ। राजस्थानी चित्रकला के अन्तर्गत मेवाड़, जयपुर, बीकानेर, मालवा, किशनगढ़, बूँदी, कोटा और अलवर शैली में चित्र बनने लगे। इन शैलियों में सबसे अधिक चित्र कृष्ण चरित्र को लेकर बनाये गये थे। पहाड़ी क्षेत्र में भी चित्रकला का काफी विकास हुआ।

पहाड़ी क्षेत्र में बसे चित्रकारों ने स्थानीय संस्कृति पर आधारित चित्रकला की वृहद परम्परा कायम की। इसके अन्तर्गत बसोहली चित्रशैली, कांगड़ा चित्रशैली, जम्मू चित्रशैली, गढ़वाल चित्रशैली, चम्बा शैली, नाथद्वारा चित्रशैली एवं सिक्ख शैली का काफी विकास हुआ। नाथद्वार चित्रशैली में श्री कृष्ण की बाल लीलाओं के सर्वाधिक चित्र बने हैं। नाथद्वारा शैली में श्रीकृष्ण की अति मोहक लीलाओं का वर्णन भी किया गया है।

'राजपूत चित्रकला एवं मध्यकालीन कृष्ण काव्य-धारा के संबंधों का विवेचनात्मक अध्ययन' विषय पर शोध करने के क्रम में राजपूत चित्रकला की उपर्युक्त शैलियों की तलाश करना शोध का मुख्य उद्देश्य होगा।

इसे स्पष्ट करने के निमित्त काव्य और चित्रकला के तत्वों पर भी विचार आवश्यक होगा। शोध को पूरा करने के लिए मध्यकालीन काव्य-कृतियों पर विचार करते हुए कुछ मुख्य कवि– विद्यापति, सूरदास, केशवदास, रसखान, बिहारीलाल आदि की रचनाओं को क्रम में रखकर शोध को पूर्ण किया जायेगा।

शोध के स्रोत–

यहाँ मध्यकालीन कविताएँ एवं तत्कालीन प्रचलित चित्र शैलियों का अध्ययन अनिवार्य होगा। चित्रमाला के ऐतिहासिक परम्परा का उल्लेख करते हुए लघु-आलेखन की प्रक्रिया पर भी विचार करना आवश्यक होगा। लघु-आलेखन में ही तत्कालीन साहित्य का मर्म पिरोया गया है। साथ ही साथ चित्रकला और काव्य-कला के तत्वों की एकरूपता का अध्ययन आवश्यक होगा। इस तथ्य को ऋग्वेद से ही देखा जा सकता है। 'होरेस और जोन्स' ने चित्रकला को काव्य के लिए अत्यंत उपयोगी माध्यम बतलाया है। उनके विचार में कविता मुखर चित्र और चित्र मौन कविता है। इस तथ्य को स्पष्ट करने के लिए अनेक तरह की पुस्तकों का सहारा लेना आवश्यक है।

शोध की आवश्यकता, उद्देश्य और प्रासंगिता–

प्रस्तुत शोध विषय पर शोध करना इसलिए आवश्यक है कि हिन्दी की मध्यवर्गीय कविताओं का शास्त्रीय मूल्यांकन तो हो पाता है लेकिन कविता में निहित चित्रधर्म को समझना भी आवश्यक है। कविता और चित्र को नवीन ढंग से समझने की आवश्यकता होगी। कविता बिम्बचित्र में प्रस्तुत होती है। इसलिए कविता को समझना और भी आसान हो जाता है। इसके माध्यम से चित्र और कविता को समझने का नया दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। शोध का उद्देश्य इसी तथ्य को स्पष्ट करना है। मध्यकालीन कृष्यकाव्य और तत्कालीन चित्रशैली के अन्तर्सम्बंधों का मूल्यांकन आज के सन्दर्भ में भी प्रासंगिक है। इससे मध्यकालीन कविताओं को और भी स्पष्टता के साथ समझा जा सकता है।

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा–

प्रस्तावित शोध प्रबंध के सम्बंध में कोई सार्थक पुस्तक उपलब्ध नहीं है। चित्र और कविता के अन्तर्सम्बंध को लेकर कुछेक सहायक पुस्तकें ही उपलब्ध है। लेकिन उन पुस्तकों में वृहद स्तर पर उपर्युक्त तथ्य की पुष्टि नहीं हो पाई है।

जयसिंह नीरज ने अपनी पुस्तक “राजस्थानी चित्रकला और हिन्दी कृष्ण काव्य” में केवक उन ग्रंथों पर ही चर्चा की गई है जिसपर चित्र बनाये गये थे। विभिन्न संग्रहालयों में कुछ चित्र संग्रहित हैं जिसका अध्ययन अपेक्षित होगा। “भारतीय चित्रकला में संगीत तत्व” के लेखक राम कुमार विश्वकर्मा ने राग-रागिनियों से सम्बंधित चित्रों को संगीत के तत्वों के साथ प्रस्तुत किया है। डॉ. गोपाल चन्द्र मधुकर द्वारा लिखित “भारतीय चित्रकला : ऐतिहासिक सन्दर्भ” में भारतीय चित्रकला की विविध शैलियों की विशेषताओं का अंकन हुआ है। वासुदेव शरण अग्रवाल ने “भारतीय कला में

प्रागैतिहासिक युग से लेकर सिन्धु घाटी की कला, वैदिक कला और शिल्प, विविध कलाओं में प्रतीक योजना एवं भारतीय मृण्मय मूर्तियों की संरचना पर प्रकाश डाला है। यहाँ भी कविता के आलोक में चित्रों की व्याख्या नहीं हुई है। इसके अलावा “कला संदर्भ और प्रकृति” (प्रेमचन्द गोस्वामी), “कांगरा पेन्टिंग ऑन बिहारी सतसई” (एम.एस. रंधावा), “काँगडा पेन्टिंग ऑन लव” (एम.एस. रंधावा) “भारतीय चित्रकला के विविध आयाम” (डॉ. प्रेमशंकर द्विवेदी), “बिहारी लाल की वर्ण-चेतना” (डॉ. उमेश कुमार) आदि की पुस्तकों में केवल चित्रों की व्याख्या प्रस्तुत की गई है। कविता और चित्र के अनतर्गसम्बंधों की वृहदरूप से चर्चा नहीं हो पाई है।

शोध-प्रविधि–

सर्वप्रथम शोध-प्रबन्ध से सम्बंधित शोध-ग्रंथों का अध्ययन अपेक्षित होगा। शोधार्थी का यह उद्देश्य होगा कि वह मध्यकालीन कविताओं का अध्ययन कर सम्बंधित कविताओं की चित्र-धर्मिता सम्बंधी भावनाओं को उजागर करें। तत्कालीन चित्र परम्परा को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। राजपूत चित्रकला के अन्तर्गत राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला की अनेक शैलियाँ प्रचालित रही हैं। जिस पर तत्कालीन साहित्य का प्रभाव भी देखा जा सकता है। अतः उन शैलियों में चित्रित कृष्ण चरित का चयन कर अध्ययन का विषय बनाया जा सकता है। शोधार्थी का उद्देश्य होगा कि कविता और चित्र के तत्व की एकात्मकता को स्पष्ट करें और शोध के क्षेत्र में नवीनता प्रदर्शित करें।

शोधार्थी का यह भी उद्देश्य होगा कि वह परीक्षण, मूल्यांकन और शोध-निष्कर्षों की स्थापना के लिए शोध-प्रविधि के दोनों कारकों का उपयोग कर शोध को मौलिकता की ओर ले जाए। आगम-पद्धति द्वारा बृहत्तर तथ्यों का संकलन और अनुशीलन किया जायेगा तथा निगमन-पद्धति से मंथन के पश्चात शोध-निष्कर्षों की स्थापना की जायेगी।

शोध की सीमा–

हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत मध्यकालीन कविताओं के आलोक में ही शोध की सीमा तय की गई है। साथ ही तत्कालीन प्रचलित चित्र-शैलियों को ही विवरण रूप में उपस्थित किया जायेगा। क्योंकि चित्र और कविता की एकरूपता पर ही केन्द्रित होकर शोध के विषय को सार्थक सिद्ध किया जा सकता है। इसके परिप्रेक्ष्य में चित्रकला की ऐतिहासिकता सम्बंधी तथ्यों को साक्ष्य के रूप में उपस्थित करने का प्रावधान रहेगा।

शोध की पूर्व कल्पना / संभावित निष्कर्ष–

शोध करने के क्रम में शोधार्थी प्रस्तावित विषय से सम्बंधित विभिन्न पक्षों का सामान्य अनुमान लगाएगी। अध्ययन में क्रम में यही अनुमान उसे निश्चित दिशा प्रदान करेगा। शोधार्थी मध्यकालीन कविताओं के विविध पक्षों के विषय में सोंचेंगी और उसकी तुलना तत्कालीन बने राजपूत चित्रकला की विभिन्न शैलियों से करेगी। काव्य और चित्र के बीच एकरूपता की जानकारी मिलेगी। श्रीकृष्ण के जीवन-चरित संबंधी तत्कालीन समय में बने लघु-आलेखन को भी प्रस्तुत किया जायेगा, जो मध्यकालीन कविता पर आधारित होगा।

अत: शोधार्थी यत्र-तत्र न भटक कर तथ्यों को संकलित करने करने में सफल होंगी। अंततः यह विश्वास किया जा सकता है कि संभावित निष्कर्ष सार्थक और सोद्देश्य होगा।

प्रस्तावित अध्याय–

प्रस्तावना (साहित्य और चित्रकला की पृष्ठभूमि)

प्रथम अध्याय : हिन्दी साहित्य में मध्यकालीन कृष्ण काव्य–धारा

(क) मध्कालीन काव्य की सीमा
(ख) मध्यकालीन काव्य की विशेषताएँ
(ग) मध्यकालीन काव्य में कृष्णकाव्य धारा की पृष्ट भूमि
(घ) मध्यकालीन काव्य और चित्रकला

द्वितीय अध्याय : काव्य और चित्र तत्व की समरूपता सम्बंधी तथ्य

(क) काव्य के तत्व
(ख) चित्रकला के तत्व
(ग) दोनों का संबंध
(घ) काव्य और चित्रकला के सम्बंध पर विद्वानों के विचार

तृतीय अध्याय : राजपूत चित्रकला के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में साहित्य

(क) राजपूत चित्रकला : राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला की विविध शैलियाँ
(ख) राजपूत चित्रकला के विषयवस्तु : पौराणिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक
(ग) तत्कालीन, मध्यकालीन चित्रों में साहित्य एवं साहित्य में चित्र

चतुर्थ अध्याय : कृष्ण काव्यधारा का राजपूत चित्रकला पर प्रभाव

(क) कृष्ण काव्यधारा का स्वरूप
(ख) राजपूत चित्रकला में साहित्य और संस्कृति

पंचम अध्याय : कृष्ण काव्यधारा और लघु-आलेखन

(क) मध्यकालीन काव्य में लघु-आलेखन की परंपरा
(ख) मध्यकालीन कवियों की रचनाओं पर आधारित लघुआलेखन

उपसंहार

सहायक एवं आधार ग्रंथ-सूची–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास– आ० राम चन्द्र शुक्ल, काशी नागरी प्र० सभा० प्रकाशक 1929ई०
2. हिन्दी साहित्य कोश– भाग - 1 एवं 2, ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी- 1, संस्करण 2007
3. रसिकप्रिया– केशव दास, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, संस्करण 1994
4. सम्पूर्ण सूरसागर– सं० डा. किशोरी लाल गुप्ता, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 2005
5. चित्रसूत्रम्: विष्णु धर्मोत्तर पुराण में चित्रकला– प्रेम शंकर द्विवेदी
6. भारत की चित्रकला– राम कृष्ण दास,
7. भारतीय चित्रकला– वाचस्पति गैरोला, पृथिवी प्रकाशन, वाराणसी, सं.– 2000
8. भारतीय चित्रकला के विविध आयाम– डॉ. प्रेमशंकर द्विवेदी, कला प्रकाशन, बी. एच.यू. वाराणसी, संस्करण - 2007.
9. प्रागैतिहासिक भारतीय कला– डॉ. जगदीश गुप्त, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली- 7, संस्करण - 1967.
10. हिन्दी रीति काव्य में सौन्दर्यबोध- उषागंगाधर राव, स्मृति प्रकाशन, शहरावाग, इलाहाबाद, संस्करण - 1985
11. भारतीय चित्रकला; ऐतिहासिक सन्दर्भ– डॉ. गोपाल चन्द्र मधुकर चतुर्वेदी, साहित्य संगम, इलाहाबाद, संस्करण - 1999
12. राजपूत पेन्टिंग– आनंद कुमार स्वामी, लंदन, संस्करण - 1916
13. राजस्थानी चित्रकला– राम गोपाल विजयवर्गीय
14. कला, संदर्भ और प्रकृति– सं०- प्रेमचन्द गोस्वामी, लोक सम्पर्क प्रकाशन, जयपुर, संस्करण-1971

15. काल और कला– दिनकर कौशिक, राजकमल प्रकाशन, 8, फैज बाजार, दिल्ली- 6, संस्करण - 1967

16. भारतीय चित्रकला में संगीत –तत्व– राम कुमार विश्वकर्मा, प्रकाशन विभाग, दिल्ली, संस्करण - 1996

17. कला और संस्कृति– वासुदेव शरण अग्रवाल, इलाहाबाद, संस्करण-1958

18. भारतीय संस्कृति और कला– वाचस्पति गैरोला, लखनऊ, संस्करण-1973

19. प्राचीन भारत में कला– विनोद-हजारी प्रसाद द्विवेदी, बम्बई, संस्करण- 1961

20. कांगड़ा पेन्टिंग ऑन बिहारी सतसई– एम.एस. रंधवा, प्रकाशन विभाग, दिल्ली, संस्करण - 1951

21. गुलर पेटिंग– एम.एस. रंधवा, प्रकाशन विभाग, दिल्ली, संस्करण - 1982

22. काँगड़ा पेन्टिंग्स ऑन लव– एम-एस रंधावा, प्रकाशन विभाग, संस्करण- 1962

23. रीतिकाल : मूल्यांकन के नये आयाम– स० प्रभाकर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण– 2016

24. कला का सौन्दर्य– सं० यतीन्द्र मिश्र– वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण– 2008 (भाग– 1–3)

25. इण्डियन मिनिएचर्स– इहरेन्फेल्ड कॉलेक्शन सं० पॉल अविन्दर

26. बूँदी पेन्टिंग– ललित कला अकादमी, दिल्ली

27. गढ़वाल पेन्टिंग– मुकुन्दीलाल, प्रकाशन विभाग, दिल्ली, संस्करण- 1968

28. इण्डियन मिनिटयर्स– वर्नर ए., न्यूयार्क, संस्करण- 1950

29. मध्यकालीन काव्यधाराएँ एवं प्रतिनिधि कवि– डॉ. बलराज शर्मा, हरियाना साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, संस्करण–1989

30. बिहारीलाल की वर्ण-चेतना– डॉ. उमेश कुमार, ग्रन्थ भारती प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2005
31. The life of Krishna in Indian Art– P. Banerjee, Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, Govt. of India, Edition– 1978
32. The Blue God– P. Banerjee, Lalit Kala Academy, India, Edition– 1981
33. Painted Visions– B.N. Goswamy, Lalit Kala Academy, India, Edition–1999

शोध-निर्देशक

प्रो० (डॉ०) उमेश कुमार
विभागाध्यक्ष
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधार्थी

ज्योति सिन्हा
पैट क्रमांक– E2209063
पुत्री– श्री वीरेन्द्र कुमार लाल
ग्राम+पो०– चंगेल, थाना- कटरा
जिला- मुजफ्फरपुर, बिहार

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

राजपूत चित्रकला और मध्यकालीन श्रीकृष्ण काव्य-धारा के संबंधों का विवेचनात्मक अध्ययन

<u>शोध-विषय पर संक्षिप्त विवरण</u>

मध्यकालीन कृष्ण काव्य-धारा और राजपूत चित्रकला के संबंधों पर विमर्श करते हुए हिन्दी यसहित्य में यमीद्वसस के नये प्रतिमान स्थापित किये जा सकते हैं। इसी तथ्य को प्रमाणित करने के निमित्त काव्य और चित्रकला की समरूपता पर विचार करते हुए राजपूत चित्रकला पर कृष्ण काव्य-धारा के प्रभाव को दर्शाना और उसके सम्बंधों पर प्रकाश डालना इस शोध-विषय का मुख्य आधार है। इसके अलावा मध्यकालीन कविताओं को आधार बनाकर लघु-आलेखन (Miniature Painting) की परम्परा जैसे तथ्यों को स्पष्ट किया जायेगा।

शोध-निर्देशक

प्रो० (डॉ०) उमेश कुमार
विभागाध्यक्ष
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधार्थी

ज्योति सिन्हा
पैट क्रमांक– E2209063
पुत्री– श्री वीरेन्द्र कुमार लाल
ग्राम+पो०– चंगेल, थाना- कटरा
जिला- मुजफ्फरपुर, बिहार